Lecture-No.- ~~10 8~~ 11 & 12

Dr. Sunil Kr. "Suman"
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Psychology
D.B. College Jaynagar
L.N.M.U. Darbhanga

Study Material
B.A. Part-II (H)
Paper-III
Date-12-08-2020
Lecture No.-11 & 12

DONEXT

~~Aspects of Mind~~

ASPECT of Mind:- Dynamic Aspects of mind.

मन का गत्यात्मक पहलु

(2) अहं (Ego):- मन के गत्यात्मक पहलु का दूसरा प्रमुख भाग है। जन्म के कुछ दिन बाद तक बच्चा पूर्णतः उपाहं की प्रवृत्तियों द्वारा नियंत्रित होता है। परन्तु सामाजिक नियमों एवं नैतिक मूल्यों के कारण उनकी सभी प्रवृत्तियाँ या ईच्छाओं की पूर्ति नहीं होती है जिसके फलस्वरूप उसमें निराशा (Frustration) का अनुभव होता है और उसका संबंध वास्तविकता (Reality) से स्थापित होता है। इस प्रक्रिया में उसमें अहं (ego) का विकास होता है। अतः मन का वह हिस्सा है जिसका संबंध वास्तविकता (Reality) से होता है, तथा जो बचपन में उपाहं की प्रवृत्तियों (id impulse) से ही जन्म लेता है। अहं वास्तविकता सिद्धांत (Reality Principle) से नियंत्रित होता है, तथा वातावरण की वास्तविकता के साथ इसका सीधा संबंध (direct relationship) होता है। अहं को व्यक्तित्व का निर्णय लेने वाला या कार्यकारणी शाखा (executive branch) माना गया है। चूंकि अहं अंशतः (partly), चेतन (concious), अंशतः अर्द्धचेतन (~~subconscious~~) (subconcious) तथा अंशतः अचेतन (unconscious) होता है, इसलिए अहं द्वारा इन तीनों स्तर पर ही निर्णय लिया जाता है। इसके लिए आगे चित्र 5.2 देखें।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

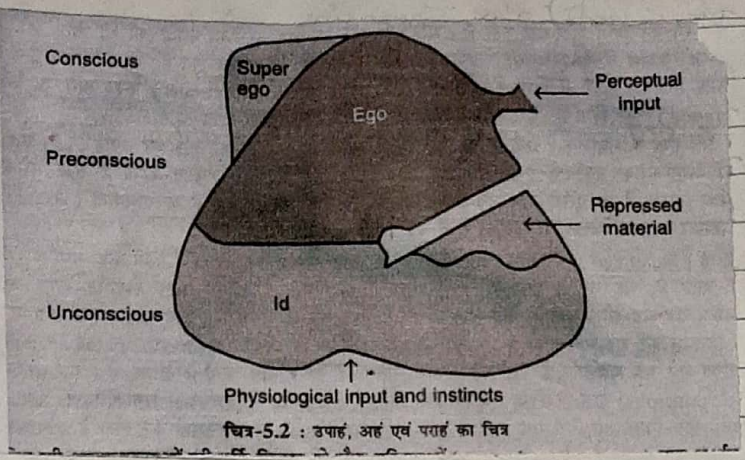

चित्र-5.2 : उपाहं, अहं एवं पराहं का चित्र

अहं व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति के चिन्तन के गौण प्रक्रियाओं (Secondary Process) द्वारा अर्थात वास्तविक चिन्तन (Realistic thinking) द्वारा न की स्वली चिन्तन (autistic thinking) द्वारा करता है। व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति करने तथा संज्ञानात्मक (cognitive) एवं बौद्धिक (intellectual) कार्यों को करने में अहं तिकोणी (three sided) संघर्ष से घिरा जाता है। अहं (ego) इन कार्यों को करने में उपाहं (id), पराहं (super ego) तथा वास्तविक दुनिया (Real world) के मांगों (demands) का ध्यान में रखता है। उपाहं (id) एवं पराहं (super ego) के मांग अवास्तविक (unrealistic) होते हैं। दूसरे तरफ बाह्य दुनिया (External world) की मांग (demand) वास्तविकता एवं सामाजिक नियमों के अनुकूल होता है। यदि अहं बाह्य दुनिया के वास्तविकता के पक्ष में निर्णय लेता है तो इससे उपाहं (id) एवं पराहं (super ego) की इच्छाओं एवं प्रवृत्तियों की अवहेलना होती है और यदि इनकी इच्छाओं एवं प्रवृत्तियों के पक्ष में निर्णय लेता है, तो दुनियाँ की वास्तविकता की अवहेलना होती है। फलस्वरूप अहं (ego) के सामने एक अजीब संघर्षमय परिस्थिति होती है जहाँ उसे इस तरह का निर्णय करना होता है जिससे इन दोनों पक्षों को समान संतुष्टि मिले। व्यक्तित्व के कार्यकारिणी शाखा (executive

branch) के रूप में अहं (Ego) किसी संघर्षमय परिस्थिति से उत्पन्न चिन्ता को कम करने के लिए बचाव मनोक्रिया या प्रक्रम (defense mechanism) का सहारा लेता है। इस बचाव मनोक्रिया के कई प्रकार हैं जिसमें दमन (Repression) एक प्रमुख प्रकार है।

अहं (Ego) के स्वरूप (Nature) को ठीक ढंग से समझने के लिए फ्रायड (Freud) के अनुसार इसकी प्रमुख विशेषताएं (characteristics) निम्नांकित हैं।

(i) अहं व्यक्तित्व की कार्यकारिणी शाखा (Executive branch) के रूप में कार्य करता है। अतः इसके द्वारा सभी महत्वपूर्ण निर्णय (decision) लिए जाते हैं।

(ii) अहं अंशतः चेतन (conscious), अंशतः अर्द्धचेतन (Preconscious), अंशतः अचेतन (unconscious) होता है। अतः इसके द्वारा इनतीनों स्तरों चेतन, अर्द्धचेतन, एवं अंशतः अचेतन होता है स्तर पर निर्णय लिया जाता है। जैसा की फ्रिड (Freud) 1933 ने कहा है, "चुंकि अहं अंशतः चेतन, अंशतः अर्द्धचेतन एवं अंशतः अचेतन होता है, इसलिए इन तीनों स्तरों में से प्रत्येक स्तर पर निर्णय लिया जाता है।"

(iii) अहं 'वास्तविकता सिद्धांत' (Reality Principle) द्वारा निर्देशित (guided) एवं नियंत्रित होता है। अहं का संबंध बाह्य संसार की वास्तविकता (reality) से सीधा होता है और इसका अर्थ में आहं (Id) एवं पराहं (Super Ego) दोनों से भिन्न है क्योंकि इन दोनों का संबंध ऐसी वास्तविकताओं से नहीं होती है

(iv) अहं का संबंध नैतिकता से नहीं होता है। (Ego is not concerned with morality):- अहं यह

नही जानता है कि उचित और अनुचित क्या है। अहं सिर्फ यह देखता है कि किसी कार्य को करने का सुअवसर अभी है या नही। सुअवसर होने पर अहं अनुचित कार्य करने की भी अनुमति दे देता है। इसे ध्यान में रखकर अहं को अवसरवादी (opportunist) कहा जाय, तो कोई अति अतिशयोक्ति (exaggeration) नहीं होगा।

(V) अहं एक अभियोजक (adjustor) के रूप में कार्य करता है। एक ओर वह उपाहं (Id) एवं पराहं (Super Ego) की अवास्तविक प्रवृत्तियों (unrealistic tendencies) से पूर्णतः अवगत रहता है और उसके परिणाम को गंभीरता पूर्वक सोचता है तो दूसरी ओर उन प्रवृत्तियों एवं इच्छाओं की सामाजिक वास्तविकता (social realities) को ध्यान में रखकर अवसर मिलने पर उसकी पूर्ति करने की अनुमति भी देता है।

Next class

Scanned with CamScanner